शोध पत्र- संगीत

प्राचीन गायन शैली ध्रवप्रद की चार बानियाँ

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबद

ध्रुपद से तात्पर्य—ध्रुवपद प्राचीन गायन शैली है। ध्रुवपद एक पुरूष प्रधान गायकी है जिसमें जोरदार आवाज कि आवश्यकता होती है। इसे गाने वालों को ''कलावन्त'' कहते हैं। इसके चार भाग होते हैं। (1) स्थायी (2) अन्तरा (3) संचारी (4) आभोग। किन्तु कुछ ध्रुवपद में केवल दो भाग होते हैं। (1) स्थाई (2) अन्तरा। यह एक उच्च श्रेणी की गायकी होती है इनमें गाये हुए पदों से भिन्न–भिन्न रसों की अनुभूति होती है जैसे वीर रस, श्रृंगार रस इत्यादि। ध्रुवपद में प्रयुक्त होने वाले ताल हैं– सूलफाक ताल, चारताल, तीव्रा, झम्पा, रूद्र, ब्रहम। ध्रुवपद के साथ पखावज की संगति का प्रचलन है किन्तु तबले पर भी ध्रुवपद की संगति होती है।

''ध्रुव– (ध्रु + क) स्थिर, अटल स्थावर, स्थायी, अपरिवर्तनीय शाश्वत (सदैव रहने वाला)

पद– पैर, पंक्ति, चरण, चौथाई (भाग) किसी कविता या श्लोक का।1 सुणेचना बृहस्पति जी ने 'ध्रुवपद' सम्बन्धी विचारों के प्रकट करते हुए कहा 'पद का अर्थ सार्थक शब्द समूह या भाषा है। वह पद जो 'ध्रुव' नामक गेय प्रबन्धों में प्रयुक्त हो वह ''ध्रुवपद'' है। अतैव ध्रुवपद शब्द ध्रुव नामक प्रबन्धों के भाषा पक्ष का बोधक है।2

संगीत मकरन्द में ध्रुवपद की परिभाषा इस प्रकार दी गई है ''ध्रुवपद में उदग्राह, ध्रुवक, आभोग ये तीन धातु है, जो प्रायः मध्यदेशीय भाषा में निबद्ध होते है। कुछ लोग 'ध्रुवपद' को उदग्राह रचित तथा कुछ लोग इसके 'ध्रुव' नामक भाग के ही 'ध्रुवपद' कहते है। यह भेद अन्वर्थ ध्रुव नामक धातु में निबद्ध पद हो जाता है।3

भट्ट ने 18वीं शताब्दी में अपने ग्रन्थ ''अनूप संगीत रत्नाकर में ध्रुवपद की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है–

''गीर्वाणमध्यदेशीय भाषा साहित्य राजितम।
द्विचतुवक्यिसम्पनं नरनारि कथाश्रयम।।
श्रृंगाररसभाववाद्य रागलापपदारमकम।
पादान्तानुप्रासयुक्तं पादान्तयुगकम् चू वा।।''

अर्थात– ध्रुवपद की भाषा संस्कृत या मध्यदेशीय हो सकती है इसमें दो या चार वाक्य होते हैं, जिनमें नर नारी की कथा होती है श्रृंगार रस भाव आदि होते है। यह रागालाप व पद से युक्त होता है इसका प्रत्येक पाद, पादान्त अनुप्रास या यमक से युक्त होता है। इस प्रकार जहाँ चार पादों का आस्तित्व हो, जिसमें उद्रग्राह, ध्रुवक और आभो नामक तीन धातु हो व ध्रुवपद कहलाता है।[4] अधिकतर विद्वानों का मत यह है कि ध्रुवपद के जन्मदाता ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर थे। (इनका समय 1486 ई0 से 1516 ई0 तक माना जाता है। किन्तु इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वतजनों का मत है कि ध्रुवपद की उत्पत्ति तो पहले ही हो चुकी थी। ''स्वामी प्रज्ञानन्द जी कहते है ''पंद्रहवीं शताब्दी अर्थात राजा मानसिंह के समय में ध्रुवपद का आविष्कार नहीं हुआ था वरन् उसे एक नया रूप दिया गया था जिसमें हिन्दू व मुस्लिम संगीतज्ञों ने राजा मानसिंह का बहुत साथ दिया।[5]

ध्रुवपद की बानियाँ –

ध्रुवपद गायन शैली बहुत ही विशिष्ट एवं गंभीर प्रकृति की गायन शैली मानी जाती है। मध्यकालीन संगीतज्ञों तानसेन, बैजू बावरा, बख्शु ,सदारंग ,अदारंग इत्यादि बहुत उत्कृष्ट ध्रुवपद गायक हुए है।ध्रुवपद की चार बानियाँ मानी जाती है।जो इस प्रकार है–

(1) गोरहार बानी या गोबरहार बानी
(2) खंडार बानी
(3) डागर बानी
(4) नौहार (नुहार) बानी

इन ''बानियों के नींवकर्ता कलाकारों के विषय में 18वीं सदी में 'मुअदनुलमौसिकी' ग्रंथ के प्रणेता 'हकीम मुहम्मद कत्य इमाम' के अनुसार ग्वालियरवासी तानसेन की बानी गोबरहार, डॉग या डागर प्रदेश निवासी ब्रजचन्द्र की बानी डागर, नोहार प्रदेश निवासी श्रीचन्द्र की बानी नौहार तथा खडार नामक प्रदेश निवासी राजा 'समोखत' सिंह (बीनकार) की बानी खंडार है।6 विद्वतजनों ने भिन्न–भिन्न ध्रुवपद बानियों को भिन्न–भिन्न गीति से जोड़ा है। इस प्रकार गौडहार बानी में शुद्धांग की विशेषताएं दिखती है। डागरबानी में भिन्ना गीति के स्वरूप के दर्शन होते हैं। खंडार बानी में बेसरा गीति के लक्षण मिलते है तो नोहारबानी में गौड़ी गीति की विशेषताएं दीख पड़ती है।अलग–अलग गीति के साथ ही साथ भिन्न–भिन्न रसों का भी प्रयोग मिलता है इन चारों बानियों में। जैसे–

(1) गोबरहार बानी—तानसेन को इस बानी का पिता कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस बानी को तानसेन के पुत्र 'बिलासखान(बिलाससेन)' ने संरक्षित किया एवं आगे बढ़ाया। यह 'शुद्धा गीति' से उत्पन्न बानी है। इस बानी में राग के स्वरुप

के अनुसार 'मींड' का प्रयोग होता है। रागों की शुद्धता पर विशिष्ट ध्यान दिया जाता है। यह बानी सुमधुर और रससिक्त करने वाली है। इस बानी में दो स्वरों के मध्य के स्थान की भरावट 'अंश स्वर' एवं 'मींड' के द्वारा की जाती रही है। इसकी प्रस्तुति सीधी एवं सरल रूप में की जाती है। यह विलंबित लय में अधिक निखरती है। इस बानी में शांत ,भक्ति और गंभीर रसों की प्रधानता होती है। इसके स्वर एवं बंदिश भावपूर्ण होते हैं। यह एक बहुत कठिन गायन बानी है। इस बानी में मींड अंश एवं अन्य अलंकारों पर विशेष नियंत्रण आवश्यक होता है। इस बानी को चारों बानियों में राजा की संज्ञा दी जाती है।

तानसेन अकबर के दरबारी गायक थे जिस बानी के ये निर्माता व अनुसरणकर्ता थे वह गोबर हार बानी थी। तानसेन के गायन परम्परा को उनके चार पुत्रों (1) तानतरंग खा (2) विलास खा (3) सूरत सेन (4) हमीर सेन ने आगे बढ़ाया ''तानसेन वंशजो में पौत्र ''सोहिलसेन'' तथा प्रपौत्र सुधनिसेव के नाम भी उल्लेखनीय है।[7]

धुपद गायन में यह घराना उच्च कोटि का घराना माना गया। तानसेन द्वारा रचित धुपदो की संख्या हजारों में मानी जाती है। इनके द्वारा रचित धुपदों में लय, भाव, रस का अत्यधिक महत्व है। इन्होंने अपने रचित धुपदों में कण मींड, गमक इत्यादि का प्रयोग कर संगीत गायन कथा को एक नया आयाम दिया। गौरहार बानी की धुवपद शैली की एक बंदिश निम्नवत है–

तालः चौताल अति मनोहर

संचारीः गोपीजन बल्लभ श्री राधा माधव लीला रचे नव नव घनश्याम सुन्दर

अभोगीः कृष्ण मंत्र साधक जन गाये सदा नाम गान दर्शन पवन के धाया अंतर

(2) डागर बानी–प्रसिद्ध धुपद घरानों में डागर घराना प्राचीन कहा जाता है। इमाम खाँ के पुत्र बाबा बहराम खाँ इस घराने के जन्मदाता माने जाते हैं। उनकी धुपद परम्परा को ही उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन डागर ने न केवल संजोया बल्कि अपने तई निरंतर उसका विस्तार भी किया। डागर धुपद बानी के संस्थापक स्वामी 'हरिदास' डागुर माने जाते हैं। इनकी परम्परा को और आगे बढ़ाने का कार्य 'बाबा गोपालदास' ने किया। इनका परिवर्तित नाम 'इमामबख्श' डागर था। अट्ठारवी शताब्दी के सबसे प्रमुख धुवपदकार इन्ही के पुत्र हैदर खाँ एवं बहराम खाँ थे। यह धुवपद बानी भिन्ना गीति के अंतर्गत आती है । इस बानी में गमक एवं कम्पन का प्रयोग किया जाता है। तानसेन की पुत्री सरस्वती देवी ने इस घराने का संवर्धन किया ,जिनका विवाह प्रसिद्ध वीणा वादक मिश्री सिंह से हुआ था । ये बानी जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में पल्लवित हुई। इस बानी को मध्य एवं विलंबित लय में गाया जाता है। इस बानी में लय का अद्भुत प्रयोग ,धमार गायन जैसा होता है । इस बानी में विभिन्न तालों का प्रयोग किया जाता है। इस बानी को धमार गायन का श्रोत भी माना जाता है। इस बानी से कई रस एवं भाव उत्पन्न होते है जिनमे मधुर रस की प्रधानता है एवं इसकी चाल मदमस्त हाथी की चाल की तरह मंद गति को धारण करती है। यह बानी शांत एवं आनंददायक होती है। चारो बानियो में इसे मंत्री की संज्ञा दी जाती है।

बहराम खाँ ने धुवपद गायकी को एक उच्च स्थान पाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ''धुवपद गायकी के उस्ताद बहराम खाँ संगीत जगत में संगीत साहित्य के गूढार्थो के ज्ञाता के नाम से विख्यात है। तंत्रकारी, जोड़ तथा ग्रंथोक्त स्वर के आधार पर बहराम खाँ डांगर द्वारा आलाप गायन की जिस नई विधि का निर्माण किया गया फलतः वही 'डागर घराने' के परम्परागत सिद्धान्तों का आधार बनी।8 डागर घराने की धुवपद परम्परा आज भी आधार की तरह भारतीय शास्त्रीय गायन में अपना एक उच्च स्थान रखती है।

(3) खंडार बानी–यह 'बेसरा गीति' से उत्पन्न बानी है । इस बानी को मिश्री सिंह एवं बाज बहादुर ने प्रयोग किया था। इस बानी में गमक का

रागः बिलासखानी तोड़ी

स्थायीः प्रेम नगर बृंदाबन आनंद धाम महातीर्थ भक्त गन के गगन पाबन मधुर मधुर

अंतराः हरी नारायण कृष्णा नारायणी राधिका जुगल रूप करे बिचरन प्रयोग तीव्र गति से होता है । इस बानी के बंदिशों को मध्य लय एवं द्रुत लय में गाया जाता है । इस बानी के मेरुखंड के तान का प्रयोग करने पर अधिक जोर दिया जाता है । इसके अतिरिक्त अन्य तानो का प्रयोग भी किया जाता है । इस बानी में अति विलंबित लय में गाने का प्राविधान नहीं है। यह बानी अलंकारिक बानी है जोकि इसे अद्भुत सौंदर्य प्रदान करती है। वर्तमान समय में इसमें स्वरों के साथ काफी मशक्कत की जाती है ,जोकि अपने मूल रूप से काफी भिन्न है । यह काफी लयात्मक बानी है जिसमे 'शुद्धा बानी' के 'यति' और 'छंद' निहित होते हैं। यह बानी बहुत श्रुति मधुर है ।इस बानी के श्रेष्ठ कलाकार मधुरता के साथ ही साथ गमक का उपयुक्त प्रयोग करते हैं। इसमें पखावज के बोलों को भी कहने की पद्धति है । अति गमक का प्रयोग प्रायः दोष उत्पन्न करता है । 'पंडित विदुर मालिक' इस बानी के श्रेष्ठ गायकों में हुए है। 'पंडित विदुर मालिक' के अनुसार यह बानी गमक प्रधान है ।तीव्रता से उच्चारित होने के कारण इस बानी की बंदिशें प्रायः लम्बी होती है। पखावज के बोलों को गमक के साथ तीव्रता से उच्चारित करते हैं । चारो बानियों में इसे सेनापति की संज्ञा दी जाती है।[9]

(4) नौहर बानी–इस बानी की उत्पत्ति गौडी गीति से मानी जाती है। इसके स्वर अत्यधिक चंचल एवं गमक युक्त होते हैं। यह बानी चारों बानियों का मिश्रित स्वरुप मानी जाती है। इसकी द्रुत लय गायकी की तुलना सिंह की चाल से भी की जाती है ,इसमें मध्य लय में गायन पर भी जोर दिया जाता है जोकि

अद्भुत रस उत्पन्न करने वाला होता है।ये बानी इसके प्रस्तुतीकरण में ही ज्यादा विकसित हुई। यह बानी अपनी सुमधुर तानो की विविधता के लिए अधिक प्रसिद्ध है जिसमे बोल बनाव ,बोल बाट लयकारी का काम होता है। आगरा घराने की गायकी इस बानी से प्रेरित मानी जाती है।

हाजी सुजान खान (दास), जो की मूलतः नौहर राजपूत थे और अलख दास,जो गोपाल नायक के शिष्य थे, के उत्तराधिकारी थे इन्हे एक बार बादशाह अकबर के दरबार में आमंत्रित किया गया था जहाँ इन्होने नुहार बानी में ध्रुवपद प्रस्तुत किया था और तभी से इस बानी का नाम नुहार बानी के नाम से प्रचलित हुआ । श्रीमती दीपाली नाग के अनुसार हाजी सुजान खान ने इस्लाम अपनाने के बाद एक बार हज के लिए मक्का गए थे और इसी यात्रा के दौरान उन्होंने एक ध्रुवपद की एक बंदिश की रचना की जो बहुत अधिक प्रसिद्ध हुई जोकि निम्नवत है –

[redacted]: राग जोग,चौताल

[redacted]: प्रथम मान अल्लाह,जिन रचो नुरे पाक
नबीजी पाई रखा ईमान, अरे सुजान

[redacted]: वालियाना मन शाहे मरदान ,ताहिर मन रैय्यादा ईमान
मन हसनैन्दीन मन कलमा ,किलाब मन कुरान।[10]

उपरोक्त विवेचना के पश्चात यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है की चारो बानिया चारो गीतियों (शुद्धा, भिन्ना,गौड़ी,बेसरा) को अपने भीतर समेटे हुए है । चारों बानियों की अपनी अलग अलग कुछ विशिष्ट विशेषताएँ हैं जो चारों बानियों को एक दूसरे से भिन्न करती हैं ।इन बानियों की विशेषता के विषय में यह पद अति प्रसिद्ध है –

साँस बड़ी गौहर की ,
मधुर बोल को नौहर जानो
आलापचारी है डागर की
जोर जोर खंडार बोले।[11]

संदर्भ ग्रंथ

1. संस्कृत हिन्दी कोष, अप्ति वामन शिवराय–पृ0–503
2. प्राचीन संगीतिक परम्पराएं एवं ध्रुवपद शैली– एक अध्ययन–अनीता शर्मा पृ0–3
3. 'भरत कोश' श्री राम कृष्ण कवि, पृ0 693
4. भाव भट्ट ''अनूप संगीत रत्नाकर''
5. स्वामी प्रग्यानन्द– अ हिस्टोरिकल स्टडी ऑफ इंडियन म्यूजिक, पृ. 16
6. संगीत विशारद बसंत– पृ.164
7. ध्रुवपद धमार अंक, संगीत 1964, पृ. 20
8. प्राचीन सांगीतिक परम्पराएं एवं ध्रुवपद शैली एक अध्ययन–अनीता शर्मा पृ. 44–45
9. ध्रुवपदरू ट्रेडिशन एंड परफॉरमेंस इन इंडियन म्यूजिक –ऋत्विक सान्याल ,रिचर्ड विदेस ,पृष्ठ 81–85
10. प्राण पिया उस्ताद विलायत हुसैन खान रू हिज लाइफ एंड कॉन्ट्रिब्यूशन टू द वर्ल्ड –तपसी घोष पृ. 9
11. ट्रेडिशन ऑफ हिन्दुस्तानी म्यूजिक –मनोरमा शर्मा, पृ. 32